दस्त का टीका विकासशील देशों में

हर साल पांच साल से कम उम्र के लाखों बच्चे दस्त की वजह से मौत के मुंह में समा जाते हैं। निमोनिया के बाद दस्त ही इस उम्र के बच्चों की सबसे बड़ी जानलेवा बीमारी है। जानलेवा दस्त के 40 प्रतिशत मामले एक रोटावायरस के कारण होते हैं।

अब एक टीके के इस्तेमाल से इस परिस्थिति में बदलाव की आशा जताई जा रही है। जल्द ही गावी (ग्लोबल एलाएन्स फॉर वैक्सीन्स एण्ड इम्यूनाइज़ेशन) द्वारा अफ्रीका में रोटावायरस टीकाकरण का एक बड़ा कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। गावी एलाएन्स जिनेवा में स्थित है। उम्मीद की जा रही है कि वर्ष 2015 तक दुनिया के 40 निर्धनतम देशों में 5 करोड़ बच्चों को टीका लगा दिया जाएगा। वैसे रोटावायरस से होने वाला संक्रमण तो दुनिया भर में होता है मगर इसकी वजह से मौतें गरीब देशों में ही होती हैं।

गावी एलाएन्स निकरागुआ, बोलीविया, गुयाना और होंडुरास में इस तरह के रोटावायरस टीकाकरण कार्यक्रम चला चुका है। अब 13 अन्य अफ्रीकी देशों में इसी तरह का कार्यक्रम चलाया जाने वाला है।

वैसे रोटावायरस के खिलाफ यह टीका विकसित देशों में काफी समय से उपलब्ध रहा है। मगर अतीत में आम तौर पर विकसित देशों में कोई टीका आने के बाद विकासशील देशों तक पहुंचने में 10-15 साल लग जाया करते थे। गावी द्वारा वित्तपोषण ने इस अवधि को काफी कम करने में योगदान दिया है। जैसे, उपरोक्त रोटावायरस टीके को मात्र 5 साल पहले ही यूएस खाद्य व औषधि प्रशासन तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्वीकृति मिली थी। यह स्वीकृति सम्पन्न व मध्यम आमदनी वाले देशों में ट्रायल के आधार पर दी गई थी। इसी टीके का गरीब देशों में परीक्षण बहुत ज़रूरी है क्योंकि देखा गया है कि इन देशों में यह टीका उतना कारगर नहीं है। गरीब देशों में बच्चे ज़्यादा कुपोषित होते हैं और उन्हें अन्य संक्रमण भी घेरे रहते हैं। वैसे यह कहा जा रहा है कि टीके से दस्त पीड़ित बच्चों की संख्या में कमी आती है और गंभीर व जानलेवा मामले कम होते हैं।

रोटावायरस टीकाकरण कार्यक्रम ने पिछले कुछ वर्षों में विकासशील देशों की सरकारों के बीच सघन अभियान चलाकर उन्हें इसके उपयोग के लिए तैयार करने की कोशिश की है। गौरतलब है कि इस टीके के साथ कई साइड प्रभावों के चलते 1990 के दशक में कई दिक्कतों का सामना करना पड़ा था और 1998 में इसे बाज़ार में उतारे जाने के मात्र छः महीने बाद वापिस ले लेना पड़ा था।

विकासशील देशों में इसकी कम प्रभाविता तथा साइड प्रभावों को देखते हुए इसे एक कार्यक्रम के तहत लागू किया जाना थोड़ा चक्कर में डालता है। वैसे गावी एलाएन्स के बारे में गौरतलब बात यह है कि इसमें दुनिया की कई सारी बहुराष्ट्रीय दवा कंपनियां शामिल हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***